Regarding rejuvenation of Chandrawat river in Paschim Champaran Parliamentary Constituency

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण): मेरे संसदीय क्षेत्र पश्चिम चंपारण के चंद्रावत नदी का अस्तित्व गंदगी और अतिक्रमण के कारण खतरे में है। बेतिया के राजा गज सिंह ने 1659 में गंडक नदी के माध्यम से जलमार्ग विकसित करने के लिए चंद्रावत को गंडक से जोड़ने का काम किया था। बेतिया के भवानीपुर गांव में सरेह से निकलने वाली कोहरा नदी संतघाट तक बहती थी। बीच में परसा और पतरखा के पास चमनिया नदी इससे मिलती है। बेतिया राजशाही भवन से कुछ दूरी पर पत्थरीघाट बनाया गया था। गंडक के रास्ते अलग-अलग जगहों से लाई गई सामग्री को यहां उतार दिया जाता था। यह जलमार्ग लगभग ढाई सौ वर्षों से उपयोग में था। मिर्जापुर के पत्थरों का उपयोग आज भी बेतिया राज द्वारा निर्मित मंदिरों में देखा जा सकता है। चंद्रावत नदी बहुत ही उबड़-खाबड़ हो गई है, लोग उसमें कचरा फेंक देते हैं। नदी किनारे पर अतिक्रमण कर मकान बना लिए गए हैं। संतघाट से पथरीघाट तक यह नाले जैसा बन गया है। यह नदी जिले की एक दर्जन पंचायतों को सिंचाई देती है और इसके अस्तित्व को बचाना चाहिए। मैं सरकार से आग्रह करता हूं कि चंद्रावत नदी के जीर्णोद्धार के लिए शीघ्र ठोस योजना बनाएं।